HINDI LANGUAGE PRACTICE SET

Directions (1-10): **नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। कुछ शब्दों को मोटे अक्षरों में मुद्रित किया गया है, जिससे आपको कुछ प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता मिलेगी। गद्यांश के अनुसार, दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त का चयन कीजिए।**

मनुष्य जो भी करता है उसके पीछे उसके मन अथवा मस्तिष्क का मार्गदर्शन होता है। मन शारीरिक इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्प्रेरित करता है, तथा इसमें उचितानुचित पर चिंतन करने की सामर्थ्य नहीं होती। मनुष्य के मस्तिष्क में उसके भूतकाल के अनुभवों की स्मृतियाँ तथा उनके उपयोग की **सामर्थ्य** होती है जिससे वह उचितानुचित पर चिंतन कर अपने कार्य करता है। उचितानुचित के चिंतन की सामर्थ्य ही मनुष्य का विवेक कहलाता है। शरीर से कार्यों हेतु संचालन की सामर्थ्य भी मस्तिष्क में ही होती है अतः कार्य चाहे मन के मार्गदर्शन में हो अथवा मस्तिष्क के, मस्तिष्क शरीर के संचालन हेतु सदैव सक्रिय रहता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मनुष्य का मन भी मस्तिष्क के माध्यम से कार्य करता है जिसमें मनुष्य के विवेक का सक्रिय होना आवश्यक नहीं होता। किसी कार्य में विवेक की निष्क्रियता का एक बड़ा कारण यह होता है कि विवेक की क्रियाशीलता में कुछ समय लगना अपेक्षित होता है। इसलिए शरीर को जब किसी क्रिया की तुरंत आवश्यकता होती है तो वह विवेक की क्रियाशीलता की प्रतीक्षा किये बिना ही शरीर को सक्रिय कर देता है। मन के मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करने का एक अन्य कारण शरीर की इच्छा की प्रबलता होती है। इस स्थिति में भी मनुष्य का विवेक सक्रिय नहीं होता।

चिंतन करना मनुष्य के अभ्यास पर भी निर्भर करता है। जो मनुष्य अधिकाँश समय चिंतन करते हैं उनका मस्तिष्क प्रायः सक्रिय रहता है जो मन पर अपना नियंत्रण बनाए रखता है। इस कारण से बुद्धिजीवी अपने सभी कार्य विवेक के अनुसार करते हैं, जब कि श्रमजीवी विवेक का यदा-कदा ही उपयोग करते हैं। इन दो वर्गों के मध्यवर्ती लोग कभी मन के तो कभी विवेक के मार्गदर्शन में कार्य करते हैं। इसके कारण उनके मन और मस्तिष्क में प्रायः संघर्ष की स्थिति बनी रहती है।

मनुष्य के शरीर की आवश्यकताएं यथा भूख, प्यास, काम, आदि प्राकृत होती हैं उन्हें समाप्त नहीं किया जा सकता किन्तु इनकी आपूर्ति के माध्यम भिन्न हो सकते हैं। ये आवश्यकताएं सभी जीवधारियों में होती हैं और यही उनके जीवन का लक्ष्य भी होती हैं। यदि मनुष्य अपना जीवन इन्ही की आपूर्ति तक सीमित कर देता है तो पशुतुल्य ही होता है। मनुष्यता पशुता से बहुत आगे है - अपनी चिंतन शक्ति, बुद्धि और संस्कारों के कारण व्यक्ति के संस्कार उसके व्यवहार को संचालित करते हैं जो अच्छे अथवा बुरे दोनों प्रकार के हो सकते हैं। उसकी चिंतन शक्ति उसके जीवन की समस्याओं के निवारण के लिए महत्वपूर्ण होती है तथा उसकी बुद्धि मानव सभ्यता को और आगे ले जाने में उपयोग की जाती है। व्यक्ति द्वारा अपनी बुद्धि और चिंतन शक्ति के उक्त सदुपयोगों के अतिरिक्त व्यक्ति इनका दुरूपयोग भी कर सकता है.

मनुष्य का मस्तिष्क बहुत अधिक विकसित होता है जिसमें अथाह स्मृति, चिंतन शक्ति और बुद्धि का समावेश होता है, इसके **सापेक्ष** अन्य जीवों के मस्तिष्क उनके मन को समर्थन प्रदान करने के लिए ही होते हैं और अधिकाँश में बुद्धि और चिंतन शक्ति का अभाव होता है। इसके कारण मनुष्य ही पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ जीव है, और इसकी विशिष्ट पहचान है - मन और मस्तिष्क का सतत संघर्ष, जिसमें मस्तिष्क प्रायः विजयी रहता है। यही मानव सभ्यता के विकास का मार्ग है।

Q1. गद्यांश के अनुसार मन और मस्तिष्क किसका मार्गदर्शन करते हैं?

(a) शारीरिक इच्छाओं व आवश्कताओं का

(b) चिन्तन का

(c) मनुष्य के सभी कार्यों का

(d) केवल (a) और (b)

(e) इनमें से कोई नहीं

Q2. गद्यांश के अनुसार मनुष्य के विवेक को किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है?

(a) मन और मस्तिष्क के समन्वय के रूप में

(b) मन और मस्तिष्क के मार्गदर्शन के रूप में

(c) अनुभवों की स्मृतियों के रूप में

(d) उचितानुचित के चिंतन की सामर्थ्यता के रूप में

(e) इनमें से कोई नहीं

Q3. लेखक ने मन के क्रियान्वन के लिए मस्तिष्क को माध्यम क्यों कहा है?

(a) क्योंकि मन निष्क्रिय होता है

(b) क्योंकि मन में चिंतन करने का सामर्थ्य नहीं होता है

(c) क्योंकि शरीर का संचालन मस्तिष्क से ही होता है

(d) उपर्युक्त सभी

(e) इनमें से कोई नहीं

Q4. मस्तिष्क सक्रीय कब रहता है?

(a) जब वह चेतन अवस्था में हो

(b) जब वह अनुभवों से पूर्ण हो

(c) इनमें से कोई नहीं

(d) जब चिन्तन अभ्यास में शामिल हो

(e) जब मन नियंत्रित और मस्तिष्क चिंतनशील हो

Q5. श्रमजीवी व्यक्ति, बुद्धिजीवी व्यक्ति से किस प्रकार भिन्न होता है?

(a) श्रमजीवी व्यक्ति केवल श्रम पर आश्रित होता है जबकि बुद्धिजीवी बुद्धि पर

(b) श्रमजीवी मन को प्राथमिकता देता है जबकि बुद्धिजीवी मस्तिष्क को

(c) श्रमजीवी व्यक्ति मन और मस्तिष्क के द्वंद्व में संघर्षशील होता है

(d) यह मन और मस्तिष्क के मध्यमार्ग को अपनाता है

(e) इनमें से कोई नहीं

Q6. गद्यांश के अनुसार मनुष्यता किससे सबंधित है?

(a) मनुष्य के मन और मस्तिष्क से

(b) प्राकृतिक आवश्यकताएं

(c) चिंतन शक्ति, बुद्धि और संस्कारों से

(d) सक्रिय मस्तिष्क

(e) इनमें से कोई नहीं

Q7. मानव सभ्यता के विकास का मार्ग क्या है?

(a) स्मृति, चिंतन शक्ति और बुद्धि

(b) बुद्धि और चिंतन शक्ति का उपयोग

(c) मन और मस्तिष्क का सतत संघर्ष

(d) मस्तिष्क

(e) इनमें से कोई नहीं

Q8. उपर्यक्त गद्यांश का शीर्षक क्या हो सकता है?

(a) मन और मस्तिष्क

(b) मन और मस्तिष्क का संघर्ष

(c) मनुष्य जीवन का आधार- मस्तिष्क

(d) मन से उपयोगी मस्तिष्क

(e) इनमें से कोई नहीं

Q9. निम्न में से कौन सा शब्द गद्यांश में दिए गए शब्द '**सामर्थ्य**' से सुमेलित नहीं है?

(a) शक्ति

(b) संभावना

(c) योग्यता

(d) क्षमता

(e) इनमें से कोई नहीं

Q10. गद्यांश में प्रयुक्त 'सापेक्ष' शब्द से निम्न में से कौन सा सबंधित नहीं है?

(a) निरपेक्ष

(b) संबंधित

(c) अपेक्षित

(d) समान

(e) इनमें से कोई नहीं

Directions (11-15): नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में दो रिक्त स्थान छूटे हुए हैं और उसके पांच विकल्प सुझाए गए हैं। इनमें से कोई दो उन रिक्त स्थानों पर रख देने से वह वाक्य एक अर्थपूर्ण वाक्य बन जाता है। सही शब्द ज्ञात कर उसके विकल्प को उत्तर के रूप में अंकित कीजिए, दिए गए शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्दों का चयन कीजिए।

Q11. राष्ट्र भाषा को_________ होना चाहिए जिससे इसे आसानी से सीखा जा सके, हिंदी में यह गुण _________ मात्रा में है।

(a) कठिन, अपर्याप्त

(b) सार्थक, अलौकिक

(c) सरल, पर्याप्त

(d) सामर्थ्य, अनंत

(e) इनमें से कोई नहीं

Q12. वनों से हमें विभिन्न प्रकार की __________ मिलती हैं, गोंद तथा शहद मिलता है तथा विभिन्न प्रकार की __________मिलती है।

(a) शांति, तृप्ति

(b) आत्मीयता, संक्रिया

(c) सामग्री, प्रकृति

(d) लकड़ियां, औषधि

(e) इनमें से कोई नहीं

Q13. अन्धविश्वास बहुत ही बुरी चीज होती है क्योंकि इसकी जड़ें ________ में फैली होती हैं, यह हमारे भय, निराशा, असहायता व ज्ञान की _________को दर्शाता है।

(a) ईश्वर, पराकाष्ठा

(b) अशांति, मंशा

(c) अंधकार, मंशा

(d) इनमें से कोई नहीं

(e) अज्ञानता, कमी

Q14. चिड़ियों व बेजुबान जानवरों को ________भी अच्छा आचरण नहीं कहलाता, इसी प्रकार पेड़-पौधों से ___________रूप से पत्तियाँ व फूलों को तोडना भी अच्छा आचरण नहीं है।

(a) चराना, अनेक

(b) नकारना, भौतिक

(c) पकड़ना, विशेष

(d) इनमें से कोई नहीं

(e) मारना, अनावश्यक

Q15. अब्दुल कलाम का नाम भारत के शीर्ष _________ के साथ लिया जाता है, प्रक्षपास्त्र और अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत का नाम रौशन करने का__________ डॉ कलाम को ही जाता है।

(a) दार्शनिक, अभिप्राय

(b) इतिहासकारों, चमत्कार

(c) वैज्ञानिकों, श्रेय

(d) उदारवादियों, औचित्य

(e) इनमें से कोई नहीं

Directions (16-20): नीचे दिया गया प्रत्येक वाक्य चार भागों में बांटा गया है जिन्हें (A), (B), (C), (D) विकल्प दिए गए हैं। आपको यह देखना है कि वाक्य के किसी भाग में व्याकरण, भाषा, वर्तनी, शब्दों के गलत प्रयोग या इसी तरह की कोई त्रुटी तो नहीं है। त्रुटी अगर होगी तो वाक्य के किसी एक भाग में ही होगी। उस भाग का क्रमांक ही उत्तर है। यदि वाक्य त्रुटी रहित है तो उत्तर (E) अर्थात 'त्रुटीरहित' दीजिए।

Q16. □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(A)/ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□(B)/ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□(c)/ □□□□□□□□□□□□(D)/ □□□□□□□□(E)□

(a) A

(b) B

(c) C

(d) D

(e) E

Q17. □□□□□□□□□□□□□□□□□□(A)/ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(B)/ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(c)/□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(D)/ □□□□□□□□□□(E)□

(a) A

(b) B

(c) C

(d) D

(e) E

Q18. □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(A)/ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(B) □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(c)/□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(D)/ □□□□□□□□□(E)□

(a) A

(b) B

(c) C

(d) D

(e) E

Q19. □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(A)/ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□,(B)/ □□□,□□□□□□□□□□□□□□□,□□□□□□□□□□□□□□□□□(c)/□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(D)/ □□□□□□□□□□(E)□

(a) A

(b) B

(c) C

(d) D

(e) E

Q20. □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(A)/□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(B) □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(c)/□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□(D)/ □□□□□□□□□(E)□

(a) A

(b) B

(c) C

(d) D

(e) E

Directions (21-25): **निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए अनुच्छेदों के पहले और अन्तिम वाक्यों को क्रमशः (1) और (6) की संज्ञा दी गई है। इनके मध्यवर्ती वाक्यों को चार भागों में बाँटकर य, र, ल, व की संज्ञा दी गई है। ये चारों वाक्य व्यवस्थित क्रम में नहीं है। इन्हें ध्यान से पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित क्रम चुनिए, जिससे सही अनुच्छेद का निर्माण हो।**

Q21. (1). 1947 में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा ने भविष्य के सुशासन के लिए शपथ ली।

(य) नौकरी के समान अवसर, विचारों की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, विश्वास, संघ, व्यवसाय और कानून

(र) अल्पसंख्यकों, पिछड़े वर्गों और अनुसूचित जाति के लोगों के लिए

(ल) तथा सार्वजनिक नैतिकता के अधीन कार्रवाई की गारंटी देता है। इसके साथ ही

(व) इसने एक संविधान की मांग की जो भारत के सभी लोगों को - न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता,

(6). विशेष सुविधाओं की गारंटी भी दी गई।

(a) ल र य व (b) य ल र व (c) व य ल र

(d) व र ल य (e) इनमें से कोई नहीं

Q22. (1). जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जल हमें और दूसरे जीव-जन्तुओं

(य) धरती पर जीवन को जारी रखना बहुत जरूरी है।

(र) बिना पानी के, किसी भी ग्रह पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

(ल) को धरती पर जीवन प्रदान करता है।

(व) पृथ्वी पूरे ब्रह्माण्ड का एकमात्र ऐसा ग्रह है

(6) जहाँ पानी और जीवन आज की तारीख तक मौजूद है।

(a) व य र ल (b) ल य र व (c) य ल व र

(d) र य व ल (e) इनमें से कोई नहीं

Q23. (1) राष्ट्र से आतंकवाद और आतंक के प्रभाव को

(य) होती है या बन जाती है जैसे सामाजिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय कार्यक्रम

(र) जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, मंदिर आदि

(ल) वो सभी जगह जो किसी भी वजह से भीड़-भाड़ वाली जगह

(व) खत्म करने के लिये, सरकार के आदेश पर कड़ी सुरक्षा का प्रबंध किया गया है।

(6) को मजबूत सुरक्षा घेरे में रखा जाता है।

(a)ल र व य (b) य व र ल (c) ल र य व

(d) व ल य र (e) इनमें से कोई नहीं

Q24. (1) वैसे देखा जाए तो

(य) प्रकृति स्वयं उस शक्ति का निर्माण करती है, जो

(र) नाना प्रकार के दाहक और पाचक रसों के रूप में

(ल) उदर के भीतर कोई अग्नि की ज्वाला नहीं है, किन्तु

(व) नाना भाँती के खाद्य पदार्थों अर्थात भोज्य को

(6) पचा सकती है।

(a) ल य र व (b) य र व ल (c) ल र य व

(d) र य व ल (e)इनमें से कोई नहीं

Q25. (1) अब वह समय फिर से आया है कि

(य) भारतीय लोक संस्कृति के आधारभूत प्रेम को,

(र) भारत के नेता, महात्मागण फिर एक बार विश्व में भ्रमण करके

(ल) जिससे वर्तमान विग्रह-अशांति का शमन होकर शांति का सुअवसर आए

(व) अध्यात्मवाद के द्वारा, दुनिया को समझायें

(6) और संसार में सुख-शांति का साम्राज्य स्थापित हो।

(a) य र व ल (b) य र ल व (c) र व ल य

(d) र य व ल (e) इनमें से कोई नहीं

Q26.निम्नलिखित में से किस मुहावरे का अर्थ 'निर्लज्ज हो जाना' है?

(a) तेली का बैल होना

(b) आँख का नीर ढल जाना

(c) आकाश से बाते करना

(d) पौ बारह होना

(e) इनमें से कोई नहीं

Q27. 'परोक्ष' शब्द का विलोम शब्द है-

(a) विज्ञ

(b) रुक्ष

(c) संक्षेप

(d) प्रत्यक्ष

(e) इनमें से कोई नहीं

Q28. 'दूसरों के दोषों को ढूंढने वाला' इस वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द है-

(a) दार्शनिक

(b) तार्किक

(c) क्षुधातुर

(d) इनमें से कोई नहीं

(e) छिद्रान्वेषी

Q29. निम्नलिखित में से किस विकल्प के सभी शब्द शुद्ध हैं?

(a) अनुगृहीत, कवयित्री, ज्योत्स्ना

(b) अनुग्रहित, कवयित्रि, ज्योत्सना

(c) अनुग्रहीत, कवियित्री, जयोत्सना

(d) अनुग्रीहीत, कवियत्री, ज्योत्सना

(e) इनमें से कोई नहीं

Q30. निम्नलिखित में से किस विकल्प में दिये गये शब्द परस्पर पर्यायवाची हैं?

(a) भुजंग, कुंजर

(b) चपला, रजनी

(c) सलिल, तोय

(d) कानन, विभावरी

(e) इनमें से कोई नहीं

Directions (31-40): नीचे दिए गए प्रत्येक परिच्छेद में कुछ रिक्त स्थान छोड़ दिए गए हैं तथा उन्हें प्रश्न संख्या से दर्शाया गया है। ये संख्याएँ परिच्छेद के नीचे मुद्रित हैं, और प्रत्येक के सामने (A), (B), (C), (D) और (E) विकल्प दिए गए हैं। इन पाँचों में से कोई एक इस रिक्त स्थान को पूरे परिच्छेद के संदर्भ में उपयुक्त ढंग से पूरा कर देता है। आपको वह विकल्प ज्ञात करना है और उसका क्रमांक ही उत्तर के रूप में दर्शाना है। आपको दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त का चयन करना है।

Q31. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) अल्प (b) मंद (c) प्रज्जवलित

(d) इनमें से कोई नहीं (e) घनघोर

Q32. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से

कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी..**(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) सामान्य (b) विलक्षण (c) विकृत

(d) तीक्ष्ण (e) इनमें से कोई नहीं

Q33. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी..**(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य

दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिट्टी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिट्टी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिट्टी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिट्टी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिट्टी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) उद्धार (b) प्रकाशन (c) सृजन

(d) आत्मोत्सर्ग (e) इनमें से कोई नहीं

Q34. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिट्टी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिट्टी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ।

विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) मोह (b) आवरण (c) अलगाव

(d) सम्मान (e) इनमें से कोई नहीं

Q35. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) उलट-पलट (b) लिप्त (c)लहूलुहान

(d) लथपथ (e) इनमें से कोई नहीं

Q36. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) बादल (b) तारे (c)दिन

(d) चाँद (e) इनमें से कोई नहीं

Q37. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा

विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) बदसूरत (b) प्रसन्न (c) आत्मसात

(d) चारु (e) इनमें से कोई नहीं

Q38. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के

..(38).. देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) मनोरथ (b) सामर्थ्य (c) कारनामे

(d) उद्देश्य (e) इनमें से कोई नहीं

Q39. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) प्यास (b) तपस्या (c) जिज्ञासा

(d) आग (e) इनमें से कोई नहीं

Q40. महाकवि कालिदास हमारे भारत की एक अमूल्य धरोहर हैं। कालिदास जी उस दीये की तरह हैं जो **..(31)..** अँधेरे में भी अपने प्रकाश से उजाला कर देता है। महाकवि कालिदास ने अपनी **..(32)..** प्रतिभा से कई सारे प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं इसलिए उन्हें भारत के सेक्सपियर के नाम से भी जाना जाता है। कालिदास जी का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। कालिदास जी ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। माना जाता है कि कालिदास जी पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन कालिदास जी शास्त्रीय संस्कृत के लेखक थे और उन्होंने कई नाटक और कविताओं का भी**..(33)..** किया है। कालिदास जी को प्रतापी राजा विक्रमादित्य के समकालीन माना जाता है। कालिदास जी को अपनी पत्नी से बहुत अधिक प्रेम था लेकिन एक घटना के कारण उनका **..(34)..** इस संसार से टूट गया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संस्कृत को आगे बढ़ाने में बिताया। कालिदास जी के जीवन की एक छोटी सी प्रेरक घटना है – महाकवि कालिदास जी, राजा विक्रमादित्य के दरबार में मुख्य कवि थे। एक दिन ऐसे ही सभी लोग दरबार मैं बैठ हुए थे। गर्मियों का समय था उन दिनों बिजली और कूलर तो थे नहीं, तो सारे लोग पसीने से **..(35)..** हुए बैठे थे। राजा विक्रमादित्य दिखने में बहुत सुन्दर थे, बलिष्ठ भुजाएं और चौड़ा सीना उनकी खूबसूरती में चार **..(36)..** लगा देता था। विक्रमादित्य के माथे से छलकता पसीना भी एक मोती जैसा दिखाई देता था। वहीं कालिदास जी एकदम कुरूप थे और पसीने की वजह से उनकी दशा बुरी बनी हुई थी। कालिदास को देखकर विक्रमादित्य को तेज हंसी आ गई और वो कालिदास से बोले – महाकवि आप कितने कुरूप हैं, और इस गर्मी में पसीने से लथपथ होकर आप और भी **...(37)..** दिखाई दे रहे हैं। कालिदास जी को राजा विक्रमादित्य की बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने पास खड़ी दासी से दो घड़े मंगाए – एक घड़ा सोने का और दूसरा मिटटी का, इसके बाद कालिदास ने उन दोनों घड़ों में पानी भरकर रख दिया। राजा विक्रमादित्य बड़े आश्चर्य से कालिदास के **..(38)..** देख रहे थे। कालिदास जी ने कहा – महाराज, देखिये ये मिटटी का घड़ा कितना कुरूप दिखता है, और ये सोने का घड़ा देखिये कैसा चमक रहा है। चलिए मैं आपको सोने के घड़े से पानी पिलाता हूँ। विक्रमादित्य ने सोने के घड़े का पानी पिया, पानी घड़े में रखा रखा उबल जैसा गया था। इसके बाद कालिदास जी ने मिटटी के घड़े से पानी लेकर राजा को दिया। वाह! मिटटी के घड़े का पानी एकदम शीतल था। तब कहीं जाके राजा विक्रमादित्य की **..(39)..** बुझी। कालिदास ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा – देखा महाराज, रूप और सुंदरता किसी काम की नहीं है, कर्म ही आपको सुन्दर और शीतल बनाते हैं। सोने का घड़ा दिखने में चाहे जितना सुन्दर हो लेकिन शीतल जल केवल मिटटी का घड़ा ही दे सकता है। राजा विक्रमादित्य भी हल्की **..(40)..** के साथ कालिदास जी की बातों से सहमत नजर आये।

(a) सन्नाहट (b) चिंता (c) थकान

(d) इनमें से कोई नहीं (e) मुस्कान